

मजदूर समाचार

मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

नई सीरीज नम्बर 107

मई 1997

अपने बारे में, इस अरबाहार के बारे में बात करने आप किसी भी दिन मजदूर लाइब्रेरी आ सकते / सकती हैं।

क्यों जानें ? क्या-क्या जानें ? कैसे जानें ? क्या-क्या कर सकते हैं ? (5)

“क्यों जानें?” का चौथा भाग पढ़ा -

पारम्परिक साजिश के तहत बहादुरी और कुर्बानी के किस्से-कहानियाँ जन्म से मृत्यु तक यहाँ-वहाँ पढ़ने तथा सुनने को मिलते हैं। ठीक है कि ये बातें प्रत्येक के सिर पर लाद भी रखी हैं, लादी भी जा रही हैं तथा इस कार्य में सबसे बड़ा पार्ट हम अध्यापक लोग ही करते हैं।

ठीक है कि सही समाज के तहत हम अनेकों बहादुरों और शहीदों के गुब्बारों से हवा निकाल सकते हैं।

“नौकरी की चिन्ता नहीं” का नारा देने वाले या तो दूध की मक्खी की तरह निकाल बाहर फैंक दिये जाते हैं या वे मैनेजमेन्टों की गोद में बैठ कर मजदूरों को ही रौंद डालते हैं। इस तरह हमारे लिये घातक वीरता के गुणगान हम क्यों करें?

कोई एक के सिर पर बैठा है तो कोई करोड़ के। यह बात भी आराम से समझ आने वाली है। खाकी वर्दी वाले व हरी वर्दी वाले संगठित गुन्डे मारते बड़े चाव से हैं परन्तु मरने के लिये उन्हें डोज दे कर विवश कर दिया जाता है।

आमतौर पर कारखानों में मजदूरों के उत्पादन का 99 प्रतिशत हड्डप कर लिया जाता है और शेष 1 प्रतिशत में से भी चुंगी काट ली जाती है।

निष्कर्ष यही है कि बहादुरी और कुर्बानी आम व्यक्ति के लिये हानिकारक ही हानिकारक हैं।

अतः समझने की बात यही है कि बहादुरी व कुर्बानी को हमें सिर के बल कर देना चाहिए।

13.4.97

- एक अध्यापक

अनुशासन से, डिसिप्लिन वालों से आप-हम वैसे ही परेशान हैं। ऊपर से यह गरमी। ऐसे में हम कम लिख पा रहे हैं। आशा करते हैं कि आप माथे पर बिना जोर डाले मरती से पढ़ सकोगे।

मन में जो है उसे नहीं कहना सफलता की कुंजी है। यह हालात कई पीढ़ियों से है। हमें उल्टा-पुल्टा न समझ लें इसलिये फौरन बता दें कि सफलता का मतलब ऊँच-नीच की सीढ़ी पर चढ़ना, अधिक से अधिक लोगों के सिर-माथों के ऊपर बैठना है।

“बोलना जानती है, बोलना जानता है” का अर्थ है मन की बात छिपाने में माहिर है। बोलने में विशेषज्ञता शिक्षा, दीक्षा और संस्कारों द्वारा थोपी जाती है। मँहगे स्कूलों में वाकपटुता-वाकयुद्ध, यानि बोलना सिखाना पाठ्यक्रम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होता है। कब मुँह बन्द रखना और कब बोलना है, क्या कहना है और क्या नहीं कहना, किस से

बोलने वाले हाँकने वाले

बात करनी है और किस से नहीं बोलना खानदानी तमीज के, ऊँचे खानदानों के सख्त मापदण्ड हैं। रही-सही कसर पेशे में उस्ताद पूरी कर देते हैं। वाकपटुता का खिताब चूर-चूर मन का पुरस्कार है।

मल्लयुद्ध
वाकयुद्ध
शास्त्रार्थ में
पटकनी देना
ऊँच-नीच
अमीर-गरीब
बड़े-छोटे के
पक्षधरों का
आदर्श है।

साहबों के मन कितने ही लहुलुहान क्यों न हों, वे बोलना सीखे होते हैं इसलिये हमें हाँकने का पट्टा अपने नाम लिखवाये होते हैं। सैंतीस-चालीस दिन काम करवाने के बाद तीस दिन का वेतन देना, यानि, हर समय कम्पनी मजदूर की देनदार रहती है पर बात वरकर द्वारा एडवान्स माँगने की करवाना; और, एक लाख का प्रोडक्शन करने वाले मजदूर को एक हजार देना.....ऐसे कमालों में बोलने की कला का भी महत्वपूर्ण योगदान है। मैनेजमेन्ट ट्रेनिंग इन्सटीट्युटों के गहन प्रशिक्षण ने पुराने मुहावरे को उलट कर “सौ लुहार की और एक सुनार की” बना दिया है। गली-मोहल्ले-फैक्ट्री के लीडर चीख-चिल्ला कर, चूल्हे-चौके में घुस कर खुसर-पुसर करके

दस-बीस हजार के कट-कमीशन लेने वाले बनते हैं और एम डी-चेयरमैन-एम पी-मन्त्री नफासत से लाखों-करोड़ों में कट-कमीशन लेते हैं।

शब्द-बाणों की बौछार में हम तब भी तमाशबीन बन कर तालियाँ नहीं बजा सकते जब पंडित-उस्ताद-मंत्री-जनरल एक-दूसरे को ललकारते हैं क्योंकि चित्त-पट्ट कोई साहब हो या न हो, हमें तो कुछ और निचोड़ा व लहुलुहान अवश्य किया जाता है। गर्जन-तर्जन के बाद साहब लोगों द्वारा एक-दूसरे से हाथ मिलाना सामान्य बात है।

डिग्रीधारी तो डिग्रीधारी, बिना पद-पोस्ट वालों को भी मन में सौ गँठें लगानी पड़ती हैं। मन की बात लबों पर न आ जाये इसके लिये हमें रोज ढेरों क्रसरत करनी पड़ती हैं। हालात ही ऐसे हैं। ऐसे हालात को बनाये रखने की तुक भी एक नहीं हजार गिना दी जाती है। तुक-तर्क-तार्किकता से हमारे मन बीन्ध दिये जाते हैं।

मन की गँठें खोल रे
तोहे गीत मिलेंगे
मीत मिलेंगे
प्रीत मिलेगी
जीवन मिलेगा
जीवन्तता मिलेगी।

मन की बात कहने वाले बोलना नहीं जानते। बराबरी-समता-साम्य के पक्षधर हाँकना भूलने की कोशिशें करते हैं। (जारी)

इस अंक की हम पाँच हजार प्रतियाँ ही फ्री बैंट पा रहे हैं। पाँच हजार मजदूर अगर हर महीने एक-एक रूपया दें तो दस हजार प्रतियाँ फ्री बैंट सकेंगी।

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद-121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंडे नाले की बगल में है।)

साहबों की गम्भीर क्रूरता को टँगड़ी मारती मजदूरों की मस्ती पृथ्वी पर आशा की किरणें हैं। साथी मजदूरों, अपनी किरणें से इस अखबार को भी रौशन करो। सूरज ने अपनी रौशनी के लिये हम से आज तक पैसे नहीं माँगे। हम उम्मीद करते हैं कि आप भी अपने मस्ती-भरे किस्सों के हम से पैसे नहीं माँगेंगे। आप फ्री दीजिये और अखबार भी फ्री लीजिये।

तकदीर कोई नहीं लिखता

तकदीर कोई नहीं लिखता
न आसमान पर बैठा ईश्वर,
न चित्रगुप्त,
न कोई अन्य देवी-देवता ।
सड़क पर झाड़ू लगाने वालों,
धूप में रिक्षा चलाने वालों,
सिर पर बोझा ढोने वालों,
कारखानों में घन चलाने वालों,
पसीने से अन्न उगाने वालों,
सुनो –
तकदीर सिर्फ एक शब्द है
सम्राटों की चरणवंदना करने वाले
भाट किस्म के बुद्धिजीवियों द्वारा
गढ़ा गया एक दोमुँहा शब्द,
जिसे इन बुद्धिजीवियों ने
सम्राटों के सिर पर
स्वर्णमुकुट की तरह सजा दिया
और तुम्हारे माथे पर थूक दिया
गाली की तरह ।
मुझे एक छुरा दो
मैं इस दोमुँहे शब्द की
हत्या करने के बाद
अमीरों के माथे पर अंकित
इस स्वर्ण अक्षर को भी खुरच दूँगा ।
– अमरीक सिंह दीप, कानपुर

गाम्भाँ मँ तै

हाम गाम्भाँ के लाक्खाँ निचलै
दरजै के करमचारी इब संगठित
हो लिये साँ आर हरियाणा
सिरकार तैं पैलीं बेर 400 रपया
मीन्ना ले कीं आँगली पकड़्य ली
सै। इब हामीं पूँचा बी पकड़्य की
दिखावाँगा। लट्ठ तो म्हारे धौरे
सदा रहै य सै, इब हाम बिचोलियाँ
नैं बी बीच तैं काढ्य दयाँगा।
चारसै का चार हजार बी हूँगा
आर दूसरी सुविदा बी ल्याँगा।
म्हारी बात नैं इकबार मैं थोड़ी
आगौ बड़ा दयो फेर देखियो थाम
म्हारे हाथ ।
– एक गाम का चौकीदार

रेमिंग्टन रैण्ड

कम्पनी की खराब आर्थिक स्थिति की गाज रेमिंग्टन मजदूरों पर वर्षों वेतन में मँहगाई ऑकड़ों के पैसे भी नहीं जोड़ने के रूप में पड़ी। कम वेतन में जैसे-तैसे गुजारा कर रहे वरकरों को रेमिंग्टन मैनेजमेन्ट तनखा भी टाइम पर नहीं देती।

फरवरी माह का वेतन 20 मार्च तक रेमिंग्टन मैनेजमेन्ट ने नहीं दिया तब एक मजदूर ने बच्चों के दाखिलों के आसन्न खर्चों के दृष्टिगत मैनेजमेन्ट को दो हजार रुपये के कर्ज के लिये आवेदन दिया। अन्य फैक्ट्रियों के वरकरों की तरह उस रेमिंग्टन मजदूर ने मैनेजमेन्ट से एडवान्स माँगा था जबकि वास्तव में वह कम्पनी के पास जमा अपने ही पैसों में से कुछ पैसे माँग रहा था। देनदार से कर्ज माँगना, एडवान्स माँगना इस उल्टी-पुल्टी दुनियाँ में एक और गँगा का उल्टा बहना है। और फिर, आवेदन देने के समय रेमिंग्टन वरकर का तो फरवरी के वेतन के संग-संग मार्च के 20 दिन का वेतन भी कम्पनी पर बकाया था। मजदूर के कम्पनी पर अन्य बकाया इसके अलावा थे।

रेमिंग्टन मैनेजमेन्ट ने वरकर को उसके अपने पैसों में से पैसे देने से तो इनकार किया ही, 8 अप्रैल को मैनेजर ने उसके साथ गाली-गलौज भी की और ऊपर से 10 अप्रैल को उस मजदूर को चार्ज शीट थमा दी।

रेमिंग्टन मैनेजमेन्ट ने मजदूरों का फरवरी माह का वेतन 7 अप्रैल को दिया।

(जानकारी हमने रेमिंग्टन मजदूर द्वारा दिये आरोप-पत्र के उत्तर से ली है। अपने उत्तर की प्रति वरकर ने हमें दी है।)

लाठी चलाओगे ?

काफी समय से लॉक आउट के शिकार एक फैक्ट्री के मजदूरों को मैनेजमेन्ट रेवड़ियाँ बॉट रही हैं। एक दिन दो बुद्ध मजदूर ट्राई करने साहबों के अड्डे पर पहुँचे। वहाँ बैठे 50 वरकर साहबों के प्रवचन सुन रहे थे। प्रवचन पूरे होने पर एक साहब ने लिस्ट देखी तो उसमें बीस-बाईस ही नाम थे जबकि उनके सामने 50 मजदूर बैठे थे—पैसे लेने के लिये पहले ही नाम लिखवाने पड़ते थे। इस पर “पैसे कम पड़ जायेंगे” कह कर साहब ने प्रत्येक मजदूर को 400 रुपये देने की घोषणा की। पैसे देते समय बुद्धिमान साहब पूछते, “हमारे लिये लाठी चलाओगे ?” अपने जैसे कुछ अन्य बुद्धुओं के साथ वह दो बुद्ध भी “जरूर चलायेंगे साहब !” कह कर और पैसे जेब में रख वहाँ से खिसक लिये।

Published

a ballad against Work

Write to us if you want to read this book.

The book is free.

Majdoor Library
Autopin Jhuggi
Faridabad---121001

हार मानना नामुमकिन है

तुम चाहते हो

ज़बान बन्द कर लूँ ?

याद रखो —

ज़बान छोटी क्यों न हो

धमकियों से

कभी बन्द नहीं होगी ।

तुम चाहते हो

मैं हाथ-पैर न चलाऊँ ?

याद रखो —

ये हाथ-पैर फौलादी हैं

कॉटों में भी

चलने के आदी हैं ।

तुम चाहते हो

मैं हर बात तुम्हारी मान लूँ ?

ऐसा करना नामुमकिन है

क्योंकि मेरा विवेक

तुमसे हर बात का

लोहा लेने को तैयार है ।

याद रखो —

सच्चा आदमी आन-बान से

जीने में ही शान मानता है

समय आने पर प्राणों की आहुति

देने से भी नहीं डरता है ।

— मदन मोहन वर्मा, ग्वालियर

एक महिला मजदूर ने सरकारी रेट से कम वेतन, तनखा बढ़ाने की माँग करने पर नौकरी से निकाल दिये जाने और दुर्व्यवहार की शिकायत श्रम अधिकारी (महिला) से जनवरी में की। दो महीने तारीखें देने के बाद अधिकारी ने लीपा—पोती कर मामले को रफा—दफा कर दिया। इस पर उस महिला मजदूर ने डी एल सी से शिकायत की जिस पर सुनवाई जारी है। बात बढ़ती देख श्रम अधिकारी (महिला) ने श्रम निरीक्षक को सम्बन्धित कम्पनी का चालान ‘करने के आदेश दे दिये हैं।

मैनेजमेन्टों के शिकंजे

मैनेजमेन्टों के लक्ष्य

काम की रफ्तार बढ़ाना कम मजदूरों से ज्यादा काम करवाना कम से कम वेतन देना मजदूरों की मेल-जोल, पहलकदमियों को बिखेरना नीरस को रंगीन दिखाना एकताओं की रचना द्वारा मजदूरों में सिर-फुटेवल करवाना दहशत का माहौल बनाना डिसिप्लिन, यानि, मजदूरों पर जकड़ को मजबूत करना बिना नागा, हर पल काम करवाना, और बेशक, अपना—अपना कट-कमीशन सुनिश्चित करना

हाँ निरन्तर, नाँ निरन्तर

आज सरल से सरल वस्तु के उत्पादन में भी अनगिनत परिवर्तनशील तत्व शामिल होते हैं। कच्चे मालों के भावों में बदलाव, बिजली-तेल-कोयला-पानी के रेटों में परिवर्तन, ट्रान्सपोर्ट चार्ज में फेर-बदल, ब्याज की दर में परिवर्तन, टैक्सों में बदलाव, मुद्राओं के भावों में परिवर्तन, थोक व फुटकर विक्रेताओं के मार्जिन में घट-बढ़, तैयार माल की अनिश्चित नैया मजदूरों के खान-पान की वस्तुओं के भावों में परिवर्तन, कमरे के किराये-भाड़ में वृद्धि, कपड़े-लत्ते के भावों में बदलाव, साइकिल की कीमत व पन्चर के रेट में बढ़ोतरी, बस-रेल-सिनेमा की टिकट के रेट यह बदलाव मंडी के लिये उत्पादन और मंडी के जरिये उपभोग के अनिवार्य परिणाम हैं। मार्केट सतत परिवर्तन, लगातार उठा-पटक लिये हैं।

मैनेजमेन्ट इन निरन्तर परिवर्तनों से निपटने के वास्ते अपने लिये स्वतन्त्रता चाहती है। मंडी की वजह से होते लगातार बदलावों से मजदूर तिलमिलाते हैं और मजदूरों के हाथ-पाँव बाँधने की मैनेजमेन्टों कोशिशें करती हैं। दरअसल, मैनेजमेन्टों की आजादी ही मजदूरों के लिये बन्धन लिये हैं।

रूटीन रोज आधार

प्रत्येक मैनेजमेन्ट जानती है कि मंडी में होती निरन्तर उठा-पटक मजदूरों द्वारा अपने हित में निरन्तर कदम उठाने को अनिवार्य बनाती है। हर मैनेजमेन्ट यह भी जानती है कि मजदूरों द्वारा हर रोज कदम उठाना मैनेजमेन्ट के लिये झँझट-आफत ही नहीं बल्कि मौत भी लिये है। इसलिये मजदूरों को लगातार कदम उठाने से रोकना मैनेजमेन्टों के लिये सर्वोपरि महत्व का है। इसके लिये :

- रोज-रोज की खींचा-तान को मैनेजमेन्ट अव्यवहारिक घोषित करती है।
- अपने झँझट को मजदूरों की परेशानी पेश करना।
- हर रोज उठते मजदूरों के कदमों पर पाबन्दी के लिये मैनेजमेन्टों ने स्कीम बनायी है।

शिकंजे रुटी रूपरेखा

अक्सर पाँच-दस-बीस वरकर मिल कर अपनी रोजमर्रा की डिमान्ड मैनेजमेन्टों के सामने रखते हैं। मजदूर खुद जो मॉग रोज-रोज करते हैं वे स्वयं में बहुत छोटी होती हैं। अपनी डिमान्डें हासिल करने के लिये मजदूर स्वयं जो कदम उठाते हैं वे भी छोटे-छोटे होते हैं। परन्तु फैक्ट्री प्रोडक्शन इस किस्म का है कि थोड़े से मजदूरों के छोटे-छोटे कदमों से भी पूरी फैक्ट्री में अफरा-तफरी मच जाती है। और, वरकरों की रोज की छोटी-छोटी मॉग जोड़ने पर साल-भर में ही हिमालय का आकार ग्रहण कर लेती है।

इसलिये मैनेजमेन्टों की स्कीम के ताने-बाने हैं –

- (1) मजदूरों को खुद कदम उठाने से रोकना;
- (2) रोज की छोटी-छोटी मॉगों से पिन्ड छुड़ाना।

रूटीन पर अमल

मनदूरों को छोटी-छोटी टोलियों को अपने पास आने से रोकने के

लिये साहब बिचौलियों का सहारा लेते हैं। खानों में सरदार और कपड़ा मिलों में जॉबर पहले यह रोल अदा करते थे। अब यह भूमिका लीडर निभाते हैं। आमतौर पर अब पाँच-सात, दस-बारह मजदूरों से मैनेजमेन्ट सीधे बात नहीं करती बल्कि लीडरों के जरिये ही बात करती है। वरकर खुद बात करने पर जोर देते हैं तब उन्हें अपने प्रतिनिधि चुन कर लीडरों के साथ उन नुमाइच्चों को भी रहने की "छूट" दी जाती है। हालात आज यह है कि मजदूर जब खुद कदम उठाते हैं तब उन्हें पहले लीडरों से टकराना पड़ता है।

मजदूरों की रोज की छोटी-छोटी मॉगों से बचने के लिये मैनेजमेन्ट दीर्घ अवधि के समझौते करती हैं। मैनेजमेन्टों और लीडरों के बीच तीन साला एग्रीमेन्ट होती है। मजदूरों का कोई समूह जब अपनी कोई मॉग करता है तो उसे एग्रीमेन्ट के वक्त उठाने के नाम पर टाल दिया जाता है। वरकर अगर नहीं मानते और अपनी डिमान्डें हासिल करने के लिये कदम उठाते हैं तो इसे कानून तोड़ना कहा जाता है। हमारी रोजमर्रा की मॉगों को नाजायज करार दे कर मैनेजमेन्ट उन्हें नकारने की कोशिश करती है।

दरअसल, हर वरकर द्वारा रोज एक कँकड़ उठाने पर एक हजार मजदूर साल-भर में अच्छे-खासे हिमालय को आसानी से ठिकाने लगा देते हैं। परन्तु तीन साल में खड़े किये जाते 73 डिमान्ड के छोटे-मोटे गोवर्धन से पार पाना मजदूरों को अपने बूते से बाहर का लगता है। यही मैनेजमेन्टों की स्कीम का सार है। दीर्घकालीन समझौते और बिचौलिये मैनेजमेन्टों के शिकंजे के ताने-बाने हैं।

शिकंजे पर रुंग-रोगन

कहने को एग्रीमेन्ट तीन वर्ष के लिये होती हैं पर आमतौर पर मैनेजमेन्ट इन्हें खींच कर चार-पाँच साल की कर देती है। बाजीगरी तथा खेल नई एग्रीमेन्ट की डुगडुगी बजाने के साथ ही आरम्भ हो जाता है। 73 या 94 या 116 डिमान्डों की लम्बी फेरिस्त गाजे-बाजे के साथ मैनेजमेन्ट को सौंपी जाती है।

आर-पार की लड़ाई वाले भाषणों के बाद चुप्पी साध ली जाती है। छह-आठ महीने निकलने के बाद "मैनेजमेन्ट बात नहीं करती" के रोने रोयें जाते हैं। फिर "करो या मरो" के धूम-धड़ाके किये जाते हैं। इज्जत का सवाल बनाया जाता है। चेयरमैन-एम.डी. डर गया है, साला भाग रहा है के किस्से और फिर एग्रीमेन्ट।

खुली और बन्द हथकड़ियाँ

अपनी आजादी और मजदूरों को बाँधने के लिये मैनेजमेन्ट दीर्घ अवधि वाली एग्रीमेन्ट करती हैं। मैनेजमेन्टों और लीडरों के बीच एग्रीमेन्टों में तन्त्र की दो बातें होती हैं :

(क) बदलती परिस्थितियों के अनुरूप कदम उठाने के लिये मैनेजमेन्ट स्वतन्त्र होगी;

(ख) एग्रीमेन्ट की अवधि के दौरान मजदूर ऐसी कोई मॉग नहीं करेंगे जिससे कम्पनी पर आर्थिक असर पड़ता हो।

विद्योध और बदलाव के ठुमके

सरल कदम जो सब मजदूर हर रोज उठा सकते हैं

अनेक बिन्दुओं पर

भिन्न-भिन्न क्षणों में

पाँच-पाँच दस-दस

मजदूरों की टोलियों द्वारा

विभिन्न मुद्दों पर

भिन्न-भिन्न रूपों में

उठाये जाते कदम

अनुशासन-नियन्त्रण-शोषण की

चौखटों को

दीमक की तरह चाट जाते हैं।

इसलिये

मजदूरों के लिये यह

सर्वोपरि महत्व के हैं

और इसीलिये

मजदूरों द्वारा खुद उठाये जाते

छोटे-छोटे कदमों को

शिक्षा, दीक्षा और संस्कार

महत्वहीन पेश करते हैं।

हाँ जी

एक फैक्ट्री में मैनेजमेन्ट अपनी सहुलियत के हिसाब से मजदूरों को कभी इस तो कभी उस मशीन पर लगा देती। उस फैक्ट्री में यूं भी एक्सीडेन्ट बहुत होते हैं, बिना ट्रेनिंग - बिना हाथ सैट हुये मशीन चलाने में तो और भी ज्यादा जोखिम है। अपने बचाव के लिये कोई मजदूर नई मशीन पर जाने में ना-नुकुर करता तो मैनेजमेन्ट गेट पास दे कर उसे गेट बाहर कर देती और उसे उस दिन का वेतन नहीं दिया जाता। ऊपर से लीडर कहते कि नौकरी करनी है तो मैनेजमेन्ट जो कहती है वह तो करना ही पड़ेगा।

इस पर बेवकूफों ने बेवकूफी की। मैनेजमेन्ट जिस मशीन पर भेजती वरकर चुपचाप उस पर जा कर काम करने लग जाते। प्रोडक्शन कम और मशीनों में फाल्ट ज्यादा। कोई आपरेशन कम तो कोई ज्यादा। पहले के बाद दूसरे और फिर तीसरे आपरेशन का सिलसिला जब-तब गड्ढ-मड्ढ - दूसरे के बाद पहला और फिर तीसरा आपरेशन। खराब करार दे कर एक पार्टी ने नब्बे टन माल लौटा दिया। जनरल मैनेजर खूब लाल-पीला हुआ परन्तु विद्वान मैनेजमेन्ट ने बेवकूफ मजदूरों को परेशान करना कम कर दिया।

बम्बई-मुम्बई फ्री-फ्री

24 अप्रैल को रात साढे दस बजे बी बी सी की हिन्दी सर्विस ने बम्बई में बस ट्रान्सपोर्ट वरकरों की हड़ताल के समाचार दिये। 24 को बसें जाम रहने की खबर देने के बाद बी बी सी संवाददाता ने ट्रान्सपोर्ट मजदूरों के एक प्रवक्ता से बात-चीत के अंश सुनाये। प्रवक्ता ने कहा कि मजदूरों ने 25 अप्रैल को बम्बई में बसें चलाने और यात्रियों से टिकट के पैसे नहीं लेने का फैसला किया है। दलीलें दे कर प्रवक्ता ने ट्रान्सपोर्ट वरकरों द्वारा लोगों को फ्री बस यात्रा करवाने के निर्णय को जायज ठहराया।

बम्बई में बस ट्रान्सपोर्ट वरकरों और अन्य मजदूरों-मेहनतकशों के बीच मस्त तालमेल वाले इस समाचार को यहाँ रेडियो-टी वी और बड़े हिन्दी व अंग्रेजी अखबारों ने सिरे से ही गायब कर दिया और बी बी सी ने भी एक बार के बाद चुप्पी साध ली। बस हड़ताल की खबरें सब ने दी पर फ्री यात्रा के समाचार से कन्नी काट कर। तीन दिन में ही बम्बई के बस ट्रान्सपोर्ट वरकरों की डिमान्ड महाराष्ट्र के मुख्य मन्त्री ने मान ली।

उगड़ा म-वगड़ा म

एक रबड़ फैक्ट्री के मजदूर की बातें:

मैं मिक्वर मैन हूँ फिर भी मैनेजर कंकड़ शर्मा ने एक दिन मुझे पैकिंग बॉक्स ढोने में लगा दिया। बक्सों को दूसरी मंजिल पर ले जाना था। मैं हर दो सीढ़ी बाद बक्से को नीचे पटकने लगा। देख कर मैनेजर बोला "धीरज सिंह तेरे से इतना हल्का बक्सा भी नहीं उठाया जाता।" मैंने कहा, "क्या करूँ साहब, उठता ही नहीं।" मजबूरन मैनेजर को साथ लग कर एक बक्सा ऊपर पहुँचवाना पड़ा। इससे तंग आ कर मैनेजर कंकड़ शर्मा बोला "धीरज तु जा कर मिक्वर का ही काम कर और लपेटुनाथ को यहाँ भेज दे।"

45 मिनट पेशाब

एक फैक्ट्री में पानी पीने, पेशाब करने, बीड़ी पीने की भी मजदूरों को फोरमैन से इजाजत लेनी पड़ती थी। वरकर टट्टी करने जाते तब लैट्रीन के सामने खड़े हो कर फोरमैन कहते, "जल्दी करो! जल्दी करो!!" बीड़ी-पानी-पेशाब-टट्टी की परमीशन देने में फोरमैन खुब ना-नुकुर करते और जली-कटी ऊपर से सुनाते।

इस पर गँवारों ने गँवारपन दिखाया। पेशाब आने पर मजदूरों ने खड़े-खड़े डिपार्टमेन्टों के अन्दर पेशाब करना शुरू कर दिया। फोरमैनों ने हैड फोरमैन से शिकायतें की। नाम ले कर भी मजदूरों की रिपोर्ट की और रौब-दाब से कुछ वरकरों को गवाह भी बनाया। इनक्वायरी में गवाह मुकर जाते। डिपार्टमेन्ट के मजदूरों से गवाही दिलाने में नाकाम होने पर अन्य डिपार्टमेन्टों के फोरमैनों को गवाह बनाया सभ्य मैनेजमेन्ट ने गँवारों के सामने हाथ खड़े कर दिये और 8 घन्टे की शिफ्ट में 45 मिनट का समय मजदूरों को पेशाब के लिये अलाट किया।

कम्प्युटर फेल

मैनेजमेन्ट व यूनियन की एग्रीमेन्ट में एक फैक्ट्री में एक डिपार्टमेन्ट के मजदूरों पर 75 की जगह 80 पीस का बोझ लाद दिया गया। मैनेजमेन्ट की टाइम स्टडी के दौरान वह वरकर चौकस नहीं थे इसलिये पूर्व में निर्धारित 75 का प्रोडक्शन भी वे मुश्किल से दे पाते थे। एग्रीमेन्ट के बाद नियम अनुसार काम करने पर इनसैन्टिव तो गया-ही गया, सॉस लेन की फुर्सत भी गई देख कर मजदूरों ने अपने अज्ञान को चमकाया।

कम्प्युटर से नियंत्रित प्रोडक्शन को पाँच आपरेशनों से गुजरना पड़ता था। एक टेप लगी थी जिस पर प्रत्येक आपरेशन के बारी-बारी से नम्बर आते थे। एक नम्बर के बाद टेप को उखाड़ कर पाँच नम्बर पर लगाने पर पहले आपरेशन के बाद सीधा पाँचवाँ आपरेशन होने लगता। मजदूरों ने टेप के साथ खेलना शुरू कर दिया। सॉस लेने की फुर्सत के संग-संग अज्ञानी मजदूर इनसैन्टिव भी लेने लगे। जल्दी खराब होती कम्प्युट्रीकृत मशीनें बदलती ज्ञानी मैनेजमेन्ट क्वालिटी में गिरावट पर गहन चिन्तन भी करने लगी।

"पिंडोष परिक्षितियाँ" --- यह भाषा सरकारों, मैनेजमेन्टों, लीडरों की है। ब्राम परिस्थितियाँ

कुछ नहीं होती। बद से बदतर होती हालात मजदूरों के लिये आम बात है।